P: ISSN NO.: 2394-0344 RNI No.UPBIL/2016/67980 VOL-3* ISSUE-6* September- 2018
E: ISSN NO.: 2455-0817 *Remarking An Analisation*

आपातकाल के बाद भारत का राजनीतिक परिदृश्य

योगेन्द्र सिंह
सहायक आचार्य,
राजनीति विज्ञान विभाग,
वीणा मेमोरियल पी.जी.कॉलेज,
करौली, राजस्थान

सारांश

25 जून 1975 को देश में आपातकाल (आन्तरिक) की घोषणा के साथ करीब–करीब सभी विपक्षी नेताओं एवं प्रमुख कार्यकर्ताओं को गिरफ्तार कर लिया गया। नवम्बर, 1976 में लोकसभा का कार्यकाल एक वर्ष के लिए बढ़ा दिया गया। इस दृष्टि से छठा आम चुनाव मार्च 1978 में होना था। लेकिन तात्कालीन प्रधानमंत्री इन्दिरा गाँधी ने फैसला लिया कि छठी लोकसभा चुनाव मार्च 1977 में हो जाना चाहिए लोकसभा भंग करने की उनकी सिफारिश राष्ट्रपति ने स्वीकार कर ली आपातस्थिति हटाई तो गयी लेकिन इतनी ढील अवश्य दी गई। कि राजनीतिक दलों की कानूनी कार्यकलापों और चुनाव प्रचार में कोई कठिनाई नहीं हो। विभिन्न पार्टियों ने घोषणा पत्र जारी किए जिसमें आपातकाल को मुख्य बिन्दू बनाया गया।

मुख्य शब्द : आपातकाल, लोकतंत्री कांग्रेस, मार्क्सवादी, साम्यवादी, जनता पार्टी आदि।

प्रस्तावना

छठे आम चुनाव कराये जाने की आकस्मिक घोषणा ने विभिन्न प्रतिपक्षी राजनीतिक दलों के समक्ष चुनौती उत्पन्न कर दी। और आपसी विलय की विचारणा को अनिवार्य बना दिया आपातकाल के दौरान प्रतिपक्षी नेताओं को आपसी विचार–विमर्श का अनायास ही अवसर मिल गया था क्योंकि आपातकाल को दौरान विरोधी दल के नेताओं को MISA के तहत जेल में डाल दिया गया था। उन पर मनमाने अत्याचार किये गये थे। जेल में विरोधी दल के नेताओं के बाल और नाखून तक उखाड़ दिये थे। जेल से छूटकर बाहर आये नेताओं के लिए यथार्थ को टालने या बँटे–बिखरे रहने के कारण स्वयं अपने अस्तित्व के विलोप का खतरा साफ था। अतः उनके अपने–2 पृथक अस्तित्व को समाहित करने तथा देश में व्याप्त राजनीतिक अभिशाप की स्थिति को समाप्त करने की प्रेरणाएँ सबल बन गई। सौभाग्य से जयप्रकाश नारायण जैसा प्रभावी नैतिक नेतृत्व भी सुलभ हुआ और जो कार्य वर्षो में नहीं हो पाया वह अवसरजन्य स्थिति के कारण कुछ दिनों में संभव हो गया अन्ततः चार विपक्षी दलों (संगठन कांग्रेस, जनसंघ, भारतीय लोकदल, समाजवादी दल) ने मिलकर मोरारजी देसाई के नेतृत्व में जनता पार्टी का गठन किया।

शोध का उद्देश्य

इस शोध का मुख्य उद्देश्य यह जानना है कि आपातकाल का देश की राजनीति पर क्या प्रभाव पडा। जिस कांग्रेस का केन्द्र एवं राज्यों में एकछत्र शासन था। कांग्रेस का प्रभुत्व समाप्त हो गया। आपातकाल के कारण ही जनता पार्टी का निर्माण हुआ और पहली गैर–कांग्रेसी (जनता पार्टी) सत्ता में आयी।

साहित्यावलोकन

भाम्यरी 'सी.पी.', 'जनता पार्टी एण्ड प्रोफाइल (नेशनल दिल्ली), 1980, पृष्ठ संख्या–16 में आपातकाल के बाद छठे आम चुनावों की घोषणा एवं जनता पार्टी (संगठन कांग्रेस, जनसंघ, भारतीय लोकदल, समाजवादी दल) के निर्माण की परिस्थितियों का विवेचन किया गया है।

इण्डियन एक्सप्रेस, नई दिल्ली, फरवरी, 1977 में जनता पार्टी का घोषणा पत्र जिसमें आपातकाल के दमन चक्र, सत्ता के केन्द्रीयकरण और मौलिक अधिकारों के हनन की निन्दा के बारें में बतलाया है।

दिनमान, फरवरी, 13–19, 1977, पृष्ठ संख्या 18–9 में कांग्रेस के घोषणा पत्र का पूर्ण वर्णन किया गया है। जिसमें यह भी बताया गया है कि कांग्रेस ने आपातकाल को उचित ठहराया था। साथ ही अनुसूचित जातियों एवं जनजातियों की दशा में सुधार करने, अल्पसंख्यकों की सुरक्षा का आश्वासन देने, उद्योगों के विकास को प्राथमिकता देने, बच्चों को प्राथमिक स्तर पर शिक्षा प्रदान करने और सैकण्डरी और हायर सैकण्डरी के स्तर को ऊँचा उठाने, स्वास्थ्य सेवाओं का विस्तार करने की बात की गई।

शकधर, एस.एल., 'सिक्सथ जनरल इलेक्शन टू लोकसभा (एडीटेड) 1977, पृष्ठ संख्या 44 में लोकतंत्री कांग्रेस के घोषणा पत्र के बारें में बताया गया है। जिसके अर्न्तगत आपातकाल के समय पास किये गये जन विरोधी और लोकतंत्र विरोधी कानूनों की समीक्षा करने का भी उल्लेख किया गया है।

नायर, कुलदीप, 'दि जजमेंट इन साइड स्टोरी ऑफ दि इमरजेन्सी इन इण्डिया', 1977, पृष्ठ संख्या 179 में 1977 के चुनाव में पराजित जन प्रतिनिधियों का उल्लेख किया गया है।

उपर्युक्त साहित्य अवलोकन को मैंने अपनी जानकारी के अनुसार पूरा करने का प्रयास किया गया है।

छटे लोकसभा चुनाव में विभिन्न पार्टियों का घोषण पत्र

जनता पार्टी का घोषण पत्र

10 फरवरी, 1977 को जनता पार्ट के उपाध्यक्ष चौधरी चरणसिंह ने अपने दल का चुनाव घोषणा पत्र जारी किया। घोषणा पत्र में आपातकाल के दमनचक्र, परिवार नियोजन की ज्यादतियों, सत्ता के केन्द्रीयकरण और मौलिक अधिकारों के हनन के लिए सरकार की निन्दा की गई। इस कार्यक्रम में आपातस्थिति को समाप्त करने, आन्तरिक सुरक्षा कानून हटाने, 42वें संविधान संशोधन को समाप्त करने, संविधान के अनुच्छेद 352 और 356 के दुरूपयोग न करने का आश्वासन दिया गया।

कांग्रेस का घोषणा पत्र

8 फरवरी, 1977 ई. को तात्कालीन प्रधानमंत्री इन्दिरा गाँधी ने कांग्रेस का घोषणा पत्र जारी किया जिसमें आपातकाल की उद्घोषणा को उचित ठहराने, परिवार नियोजन कार्यक्रम में जोर जबदरस्ती नही करने और गरीबी हटाने का आश्वासन दिया गया।

लोकतंत्री कांग्रेस का घोषणा पत्र

21 फरवरी, 1977 को लोकतंत्री कांग्रेस के महासचिव हेमवतीनंदन बहुगुणा ने अपने दल का घोषणा पत्र जारी किया। 10 पृष्ठीय इस घोषणा पत्र में आपातस्थिति को तत्काल समाप्त करने, आंतरिक सुरक्षा कानून को वापिस लेने, राजनीतिक बंदियों को तत्काल रिहा करने, आपात्तिजनक सामग्री के प्रकाशन पर प्रतिबंध समाप्त करने, चुनाव में मतदाताओं को आतंकित करने के लिए पुलिस और अर्द्धसैनिकों का प्रयोग नहीं करने, आकाशवाणी, समाचार और दूरदर्शन जैसे सरकारी प्रचार के साधनों के संबंध में आपातकाल के पूर्व के नियमों को अपनाने और बंदी प्रत्यक्षीकरण की सुविधा और न्यायिक पुनरावलोकन को बहाल करने के आश्वासन दिये गये।

भारतीय साम्यवादी दल का घोषणा पत्र

9 फरवरी, 1977 को भारतीय साम्यवादी दल का चुनाव घोषणा पत्र जारी किया गया। घोषणा–पत्र में चुनाव का महत्त्व, आपातकालीन स्थिति का समर्थन, आपातकाल के बाद उभरती नकारात्मक प्रवृतियों के विरोध का उल्लेख किया गया।

दल ने जनता के सम्मुख 10 सूत्रीय कार्यक्रम प्रस्तुत किया। लोकतंत्र की रक्षा हेतु आपातकाल को समाप्त करने, प्रेस संसरशिप को हटाने सत्तारूढ़ दल के पक्ष में आकाशवाणी, दूरदर्शन और समाचार के दुरूपयोग को रोकने का उल्लेख किया गया।

मार्क्सवादी साम्यवादी दल का घोषणा पत्र

इसमें निम्नलिखित बिन्दुओं पर जोर दिया गया। प्रथम आपातकाल को हटाया गये सभी राजनीतिक बंदियों को रिहा किया जाये। आन्तरिक सुरक्षा कानून और 42वें संविधान संशोधन को समाप्त किया जाये। आपत्तिजनक सामग्री के प्रकाशन पर प्रतिबंध समाप्त किया जाये।

घोषणा पत्र में यह भी संकल्प व्यक्त किया गया कि दल ने जहाँ तक संभव हो सके। कांग्रेस के विरूद्ध अन्य दलों से समझौता कर विपक्षी मतों के विभाजन को रोकने का निर्णय किया है। यह दल उन सभी दलों और गुटों के साथ सहयोग करने के लिए तैयार हैं जो प्रजातंत्र की रक्षा के लिए कांग्रेस से संघर्ष कर रहे थे।

उपर्युक्त विश्लेषण से यह स्पष्ट हो जाता है कि विपक्षी दलों ने आपातकाल के 19 महीनों में हुई कथित ज्यादतियों के लिए सत्तारूढ़ कांग्रेस की भर्त्सना करते हुए देश के लोकतंत्रीय और संघीय स्वरूप को पुनः बहाल करने का स्पष्ट आश्वासन और संकल्प भारतीय मतदाताओं के समक्ष प्रस्तुत किया।

20 मार्च, 1977 को सायं 5 बजे से आकाशवाणी और दूरदर्शन ने अपने नियमित और विशेष चुनाव प्रसारणों से चुनाव परिणाम घोषित करना प्रारंभ किया। इस चुनाव में साधन, संगठन और शक्ति सम्पन्न कांग्रेस को न केवल महापराजय का सामना करना पड़ा अपितु देश का सर्वाधिक लोकप्रिय और शक्तिशाली प्रधानमंत्री इंदिरा गाँधी तक पराजित हो गई। वास्तविकता यह है कि कांग्रेस को रावी तट से लेकर हुगली तक लोकसभा की सीट प्राप्त करने के लिए लाले पड़ गये थे।

निष्कर्ष

अतः निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि देश में आजादी से लेकर 1975 तक कांग्रेस का एकछत्र शान था। पहली बार केन्द्र में गैर–कांग्रेस सरकार बनी। आपातकाल की ज्यादतियों का जनता पर इतना गहरा आघात पड़ा। निश्चित रूप से उन चुनाव परिणामों पर भारतीय मतदाताओं की राजनीतिक परिपक्वता और दक्षता सामने आई। उन्होंने स्पष्ट कर दिया कि भारत में लोकतंत्र ही शासन का एकमात्र विकल्प हो और वंशानुगत राजवंश के लिए कोई स्थान नहीं है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. *दैनिक जागरण, 25 जून, 2015, आगरा–मथुरा।*
2. *भाम्परी, सी.पी., 'जनता पार्टी एण्ड प्रोफाइल (नेशनल दिल्ली)', 1980.*
3. *दि इण्डियन एक्सप्रेस, नई दिल्ली, 11 फरवरी, 1997.*
4. *दिनमान, फरवरी, 13–19–1977, (टाइम्स ऑफ इण्डिया प्रकाशन, नई दिल्ली)*
5. *शकधर, एस.एल., ''सिक्सथ् जनरल इलेक्शन टू लोकसभा (एडीटैड)'' 1977, (लोकसभा सचिवालय प्रकाशन, नई दिल्ली)*
6. *दिनमान, फरवरी 20–26–1977 (टाइम्स ऑफ इण्डिया, प्रकाशन, नई दिल्ली)*
7. *नायर, कुलदीप, 'दि जजमेंट : इन साइड स्टोरी ऑफ दि इमरजेन्सी इन इण्डिया' (विकास पब्लिशिंग हाउस, 1977)*